Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आजादी के बाद का स्त्री और हिंदी साहित्य : राजेंद्र यादव के कथा-साहित्य का विशेष संदर्भ

डॉ. पंढरीनाथ शिवदास पाटिल, गंगामाई महाविद्यालय। नगाँव, धुले, महाराष्ट्र.

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों में राजेंद्र यादव का नाम एक चर्चित उपन्यासकार के रूप में लिया जाता है। स्वतंत्रता के बाद राजेंद्र यादव, मोहन राकेश तथा कमलेश्वर को विवादित रचनाकारों और नई कहानी आंदोलन के प्रवर्तकों के रूप में भी जाना जाता है। इन तीनों साहित्यकारों ने नवीन परिस्थितियों, विचारधाराओं और मान्यताओं के साथ अपनी रचनाओं में नए मूल्यों को स्थापित किया। राजेंद्र यादव की गणना उन साहित्यकारों में की जाती है जो उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक एवं संपादक के रूप में विख्यात हैं। 'नारी' शब्द के समानार्थक- स्त्री, (लड़की) महिला, औरत, जनाना, कामिनी आदि नामों को भी प्रयोग में लाया जाता है। राजेंद्र यादव के शब्दों में ही अगर कहें तो "स्त्री हमारा अंश और विस्तार है। वह हमारी ऐसी जन्मभूमि है जिसे हमने अपना उपनिवेश बना लिया है। हमारी सोच और संस्कृति के सारे सामंती और साम्राज्यवादी मूल्य उपनिवेशों के आधिपत्य और शोषण को जायज ठहराने की मानसिकता से पैदा होते हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में दुनियाभर में जो उपनिवेश भौतिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र हुए उनमें 'स्त्री' नाम का उपनिवेश भी है। दलित हमारे घरों और बस्तियों से बाहर होता है। स्त्री हमारे भीतर है, इसलिए उसका संघर्ष ज्यादा जटिल है।"1

राजेंद्र अपने उपन्यासों में जनतंत्र और समाज के हाशिए पर खड़ी स्त्री की दशा का वर्णन करते हैं। स्त्री की समस्याओं का चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में बहुत बारीकी से किया है। स्त्री की समस्या को ही नहीं बल्कि आजादी के बाद सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों जैसे, दलित, आदिवासी, मजदूर और किसान आदि असहाय लोगों की समस्याओं का भी वर्णन उनके कथा साहित्य में किया गया है। वहाँ यह चित्रित है कि कैसे सामंती समाज के द्वारा उनके साथ पीढ़ी दर पीढ़ी भेदभाव, जाति-पाति, ऊँच-नीच, अंधविश्वास के नाम पर प्रताड़ित किया गया। जिस समाज में अनैतिकता का बोलबाला हो, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी, दुश्मनी आदि से उत्पन्न संत्रास, ऊब, घुटन, कलह, रहन-सहन, आजीविका निर्वाह की समस्या, आचार-व्यवहार, परिवेश आदि के कारण भूमिहीन खेतिहारों, बंधुआ मजदूरों और श्रमिकों को दरिद्रता की भयावह स्थिति के रूप में जीवन गुजारना पड़ेः ऐसे विषमतामूलक परिवेश का वर्णन उनके यहाँ मिलता है।

राजेंद्र ने अपने उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' में लिखा हैं कि "आप लोग स्त्री का मूल्य केवल उसके शरीर के उपयोग से ही नापना चाहते हैं कि कितने आदमियों ने या एक आदमी ने कितने समय उसका उपयोग या उपभोग किया है? हमारा संस्कारगत और धार्मिक दृष्टिकोण जितना ही सेक्स को नगण्य, महत्वहीन और साधारण बनाने के नारे लगाता है, व्यवहार में उतना ही अपने आप को उसपर केंद्रित कर लेता है। मनुष्य की सारी अच्छाई-बुराई उसी से नापता है।... मुझे याद है सामरसैट मॉम ने कहीं लिखा है, जब हम सदाचार की, वर्चु की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में सिर्फ एक चीज होती है, वह है सेक्स, लेकिन सेक्स सदाचार का न तो अनिवार्य हिस्सा है, न सबसे अधिक प्रधान ही।"2 वे स्त्री और पुरुष में कोई खास अंतर या फर्क नहीं मानते हैं स्त्री-पुरुष के शरीर की बनावट में ईश्वर ने कुछ खास अंतर या परिवर्तन नहीं किया है। लेकिन पुरुष स्त्री के शरीर के अंगों को यौन कामुकता की दृष्टिकोण से देखता आ रहा है। औरतों की तस्करी, औरत की हत्या, भ्रूण हत्या, वेश्यालय, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाएँ गाँव से अधिक नगरों में कही अधिक दिखाई पड़ती हैं। इनसे पहले अन्य साहित्यकारों जैसे प्रेमचंद ने स्त्री की समस्याओं को केंद्रबिंदु या आधार बनाकर 'सेवासदन', 'निर्मला' और 'गबन' जैसे उपन्यासों की रचना की। जिसमें वेश्यावृत्ति, बालविवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह आदि स्त्री समस्याओं का चित्रण मिलता है। बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों जैसे 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी', 'जी जी जी' में जैसे स्त्री की पीड़ा का कारुणिक चित्रण किया गया है। जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' आदि उपन्यासों में स्त्री-पुरुष सहजीवन और प्रेम की कथा है। प्रसाद की नारी अपने अधिकारों के लिए, देश के लिए, अपने मान-सम्मान और अभिमान के लिए संर्घषशील है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'हृदय की परख', 'अमर अभिलाषा' में स्त्री की पीड़ा दिखाई पड़ती है। सियारामशरण गुप्त के 'गोद', 'नारी' में नारी युगों-युगों से अंधकार

में जी रही है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के 'अप्सरा', 'अलका', 'निरुपमा' उपन्यासों में स्त्री पुरुषों के विरुद्ध नहीं है इसमें दोनों की समानता पर बल दिया गया है। प्रेमचंद के बाद जैनेंद्र स्त्री को केंद्र में रखकर उनकी समस्याओ को अपने उपन्यासों में उठाने की कोशिश करते हैं। जिसमें 'परख-, 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', मुख्य हैं। इनके अतरिक्त अन्य साहित्यकारों ने भी स्त्री की समस्या को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखे हैं। 'दिव्या', 'कड़ियाँ', 'कुंतों', नदी के द्वीप', 'एक पति के नोट्स', 'बेघर, मछली मरी हई', 'मित्रो मरजानी', सूरजमुखी अंधेरे के', 'नदी और सीपियाँ 'आपका बंटी', 'सफेद मेमने' आदि उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन की कटुता, स्त्री की पराधीनता-जन्य पीडा और व्यक्ति की अतृप्त यौन आकांक्षाओं का भी चित्रण किया गया है।

राजेंद्र के कथा साहित्य में 'सारा आकाश', 'उखडे हुए लोग', 'कुलटा', 'शह और मात'. 'एक इंच मुस्कान', 'अनदेखे अनजान पुल', 'एक था शैनेंद्र', 'मंत्रविद्ध' छोटे-छोटे ताजमहल', 'संबंध', 'टूटना', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'प्रतीक्षा', 'रोशनी कहाँ है', 'भय', 'सिंहवाहिनी' आदि प्रमुख है। राजेंद्र का आरंभिक विचार संयुक्त परिवार का बदलता हुआ ढाँचा तथा स्त्री है। वह स्त्री पढी-लिखी, उपार्जन क्षम, वैयक्तिकता-संपन्न स्वतंत्र स्त्री है। आधुनिक युग में पहली बार महिलाएँ अपने घर के चौखट से बाहर आई और कामकाज, हक तथा अधिकार के लिए लड़ी। पहले स्त्रियाँ गुलाम थीं, और आज भी उनको गुलाम बनाने की साजिश की जा रही है। तथा उन्हें समाज के दद्वारा बेड़ियों में जकड़ने की कोशिश की जा रही है। आज समाज में रूढ़ियों एवं पाखंडों तथा अंधविश्वास का तेजी से विस्तार हुआ है राजेंद्र यादव के संदर्भ में धूमिल की यह पंक्तियाँ उनके लिए बिलकुल सही प्रतीत होती है कि 'मैं मरूँगा सुखी... क्योंकि मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई हैं।' समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और छुआछूत जैसी बीमारी आज भी मौजूद है।

स्त्री के साथ समाज में हो रहे अन्याय, अपराध, शोषण, बलात्कार की घटनाएँ आए दिन टीवी अखबारों में देखने को मिलती हैं। जिसे पढ़ता, सुनता, देखता हर व्यक्ति है लेकिन इसे कोई गंभीरता से नहीं लेता चाहे वह किसी वर्ग की स्त्री हो, सभी का समान रूप से शोषण किया जा रहा है। स्वतंत्रता के बाद समाज को इन्ही विषमताओं के साथ जोड़कर देखना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद स्त्री के मन की कुंठा, विकृति, काम, प्रेम सब पर सूक्ष्म सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया गया है। राजेंद्र के कथा साहित्य में आधुनिक भारतीय समाज की स्त्री के बदलते स्वरूप का परिदृश्य क्रांतिकारी है।

आजादी के इतने दिनों बाद भी भारतीय समाज में कुछ समुदाय कई समस्याओं तथा विसंगतियों से जूझ रहे हैं। बाल विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, कुपोषण, शोषित, वंचित, पीड़ित, कुंठित समाज के खोखलेपन आदि का शिकार सबसे अधिक महिलाएँ हैं। राजेंद्र यादव अपने कथा साहित्य में समाज के उन तमाम अवगुणों से अवगत कराते हैं? जो विभिन्न समस्याओं के मूल में हैं।

तस्लीमा नसरीन लिखती हैं कि 'औरत का कोई देश नहीं। हाँ, मैं विश्वास करती हूँ, औरत का कोई देश नहीं होता। देश का अर्थ अगर सुरक्षा है, देश का अर्थ अगर आजादी है तो निश्चित रूप से औरत का कोई देश नहीं होता। धरती पर कहीं कोई औरत आजाद नहीं है, धरती पर कहीं कोई औरत सुरक्षित नहीं है। सुरक्षित नहीं है, यह तो नित्य प्रति की घटनाओं-दुर्घटनाओं में व्यक्त होता रहता है। इसकी तात्कालिक प्रतिक्रिया हैं- ये अधिकांश कॉलम । एक-एक मुहर्त मिलकर युग का निर्माण करते हैं। मैं जिस युग की इनसान हूँ, उसी युग के एक नन्हें अंश के टुकड़े-टुकड़े नोचकर, मैंने इसे फ्रेम में जड़ दिया है। जो तस्वीर नज़र आती है, वह आधी-अधूरी है।"4 शिक्षित स्त्री अपने अधिकारों या समस्याओं से भलीभाँति परिचित है। क्या उचित है? क्या अनुचित है? उसके लिए? उन सभी से वह वाकिफ है। घर, परिवार, समाज में सबसे कमजोर स्त्री है। लेकिन अब स्त्री असहाय, कमजोर नहीं, वह अपने अधिकारों से परिचित है। पुरुष कितना भी दुराचारी, पापी, दुष्ट, चरित्रहीन, अत्याचारी और बलात्कारी क्यों न हो, समाज को उसकी चरित्रहीनता नहीं दिखाई पड़ती है? क्योंकि वह पुरुष है। इन तमाम विसंगतियों के बावजूद स्त्री खुद संघर्ष की लड़ाई लड़ती हुई नजर आती है। नारी विकट परिस्थितियों में भी आत्मनिर्भर ही होती है। वह समय के यथार्थ के साथ सामाजिक मार्यादाओं को तोड़कर नवीनता को स्थापित करती है। सिमोन द बोउवार के अनुसार "औरत? औरत के लिए कोई स्वप्नद्रष्टा एक बड़ा ही सीधा फार्मूला उच्चारित करता है। औरत? औरत एक गर्भ है, अंडाशय है और एक

औरत है, ये शब्द काफी हैं, उसको परिभाषित करते के लिए। पुरुष के मुँह से औरत शब्द एक अपमानजनक ध्वनि रखता है। पुरुष फिर भी अपनी पाश्विक प्रकृति के लिए लज्जित नहीं होता, बल्कि उसको इस बात का अभिमान होता है कि वह एक पुरुष है। औरत शब्द इसलिए अपमानजनक नहीं कि औरतों का होना पुरुष के लिए एक विद्वेषपूर्ण स्थिति है। अपनी इस भावना का औचित्य पुरुष जीव-विज्ञान में खोजना चाहता है। औरत सुस्त, चंचल, बेवकूफ, कठोर व वासनात्मक, क्रूर और अवमानित कुछ भी हो सकती है। पुरुष एक ही साथ इन सारे गुणों को उस पर आरोपित करता है। वस्तुतः इन सारे विरोधाभासों के बावजूद औरत सिर्फ एक औरत रहती है।"5 स्त्री को यौन-सामग्री और संतान पैदा करने वाली मशीन के सिवा कुछ भी नहीं समझा जाता। समाज में स्त्री चाहे कितनी भी शिक्षित या पढ़ी लिखी क्यों न हो? लेकिन उसके साथ व्यवहार अशिक्षितों वाला ही किया जाता है।

हिंदी कथा साहित्य का दिन-प्रतिदिन विस्तार होता जा रहा है। दलित, स्त्री, किसान, मजदूर, आदिवासी, अल्पसंख्यक, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि के साहित्य को देख सकते है। इन सभी वर्गों के लोगों के द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य में योगदान किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे अन्याय, शोषण, अत्याचार को झेलते-झेलते वे टूट चुके थे। इसलिए उन्होंने उन कुरीतियों के खिलाफ लिखना और लड़ना शुरू किया। वे विपरीत परिस्थिति में आगे बढ़ रहे हैं। पूजा-पाठ, रीति-रिवाज, कर्मकांड धर्म, सभ्यता आदि अवगुणों को रेखांकित कर उसका खंडन कर रहे हैं। इसके साथ ही वे अपनी बात समाज के सामने बडी सहजता-सरलता के साथ रख रहे हैं।

'सारा आकाश' उपन्यास की मुख्य समस्या है पति-पत्नी का आपसी संवाद न होना। अपासी संवाद न होने के कारण ही वे अपने दुख दर्द को एक दूसरे को नहीं बता पाते। प्रभा और समर का आपसी संवाद न होना ही उनके बीच विवाद का कारण बनता है। परिवार की संकीर्ण मानसिकता के बीच दाम्पत्य जीवन में दरार एवं उनके दुराचार के प्रति आक्रोश व्यक्त करके नैतिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया गया है। परिवार में प्रभा की स्थिति अपने ही घर में दयनीय एवं कारुणिक है। उसे सभी के ताने सुनने पड़ते हैं। छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए उसे तरसना पड़ता है। उसे समर के घर न लौटने तक भूखा रहना पड़ता है। वह दिन-रात घर के कामों में लगी रहती है इन सबके बावजूद घर में उसकी दो कौड़ी की भी इज्जत नहीं है। समर का प्रभा से न बोलना असीम कष्टदायी व पीड़ादायी है। अपने साथ हो रहे शोषण से वह पूरी तरह परिचित है। लेकिन अपने परिवार या पति के प्रति कोई शिकायत नहीं करती। उस व्यवस्था के प्रति वह तब तक अनभिज्ञ रहती है, जब तक उसके चरित्र पर लांछन नहीं लगा दिया जाता है। आज भी कुछ स्त्रियाँ पुरुषवादी मानसिकता की गुलाम है। ऐसी स्त्रियाँ ही स्त्रियों का शोषण करके उसे कमजोर और असहाय बना देती हैं।

राजेंद्र यादव का उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' (1956 ई) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रकाशित हुआ। जिसमें सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यथार्थ का वर्णन किया गया है। वे मध्यवर्ग की आशा-आकांक्षा, पीड़ा-विषाद, राग-विराग, शोषण-अत्याचार को अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त करते हैं और राजनीतिक, सामाजिक स्वार्थपरता एवं विसंगतियों को बखूबी से अभिव्यक्त करते हुए नजर आते हैं। वस्तुतः यह कथा प्रेमी और प्रेमिका के साथ-साथ एक धूर्त नेता की कथा है। नेता की खाल में वह वहशी, क्रूर, बर्बर, अत्याचारी, पूँजीवादी व्यक्ति की विसंगतियों का चित्रण किया गया है। वस्तुतः यह कथा जीवन को यथार्थ से जोड़ने का प्रयास करती है। उसमें मानव की उत्तेजना, खीझ, आक्रोश, निराशा, कुंठा, असंतोष सब कुछ देखा जा सकता है। पुराने मूल्य आज टूट रहे हैं और नए मूल्य स्थापित हो रहे हैं। समकालीन उपन्यास में इस विघटन को हर स्तर पर अनुभूति का विषय बनाने की कोशिश की गई है।

राजेंद्र यादव ने सदियों से सामाजिक परंपराओं में जकड़े हुए समाज की तस्वीर प्रस्तुत करने की कोशिश की है। समाज में महिलाओं के प्रति जो सोच है। उसी प्रकार की सोच एक स्त्री भी दूसरी स्त्री के प्रति रखती है। किसी स्त्री का दूसरे पुरुष के साथ अनैतिक या नजायज संबंध है तो उसे स्त्री और पुरुष दोनों एक ही दृष्टि से देखते हैं। उपन्यास में ऐसे ही समाज का ताना-बाना प्रस्तुत किया गया है।

राजेंद्र यादव के उपन्यास 'शह और मात' (1959) में नायक और नायिका एक उपन्यासकार, कहानीकार, लेखक, पत्रकार, नाटककार के रूप में चित्रित हैं। इस उपन्यास में कथा के अंदर कथा चल रही है। इसका नायक, चालक, शातिर, सतर्क, धूर्त एवं बुद्धिमान है। जिसकी कई स्त्रियों के साथ मित्रता है परंतु वह इस संबंध को दूसरी स्त्री से नहीं

बताता है। नायिका सुजाता को ध्यान में रखते हुए उपन्यास के पात्रों को जीवंत में गढ़ा गया है। सुजाता के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं। उपन्यासकार ने उसी को अपना केंद्र बिंदु बनाया है। पात्र की दृष्टि से दोनों में से एक को अंधकार में रखकर दसरे से विचार या विमर्श करता रहता है। इस उपन्यास को डायरी शैली के रूप में लिखा गया है।

'अनदेखे अनजान पुल' (1963) उपन्यास में कथा तीन रूपों में विभाजित है। कथा किसी अन्य पुरुष के माध्यम से चलती तथा संचालित होती है। यह वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। यह मानसिक हीनता से आक्रांत हताश और टूटी हुई स्त्री की कहानी है। नायिका निन्नी को माध्यम बनाकर कथा को प्रस्तुत करने में लेखक सफल रहा है। अंत में दर्शन के सहज प्यार एवं व्यवहार से वह अपनी देह की कुरूपता की अवचेतन को सँभाल लेती है। यह उपन्यास मनोविकारों एवं मनोविश्लेषण से संबंधित है।

'मंत्र विद्ध' उपन्यास एक ऐसी छात्रा की कहानी है जो प्रेमजाल में फँसकर अपने जीवन को निराधार बना लेती है। विवाहित शिक्षक और छात्रा के बीच उत्पन्न प्रेम दोनों को अपने घर से भागने के लिए विवश कर देता है। वे दोनों दिल्ली से भागकर कोलकाता आते हैं। इसे लेखक ने लघु उपन्यास के रूप में लिखा है। कथानक सांकेतिक शैली में यह विवाहित तारक और छात्रा सुरजीत के आपसी संबंधों की कहानी है। दो प्रेमी घर से भागकर मोहन और इंदु के घर शरण लेते हैं। इसमें महानगरीय जीवन की विषमता और व्यक्तिविहीन प्रेम की तीक्ष्णता को तारक के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। तारक अवसरवादी एवं हीन मनोवृत्ति वाला व्यक्ति और मानसिक रोगी भी दिखाई पड़ता है। सुरजीत अपने घर से निकल जाने के बाद अपने घर वापस नहीं जाना चाहती है लेकिन तारक की चाल में ग्रसित तारक धूर्त, हीनभाव से ग्रसित एक कुंठित और शंकालु स्वभाव का व्यक्ति है। राजेंद्र यादव उसके चरित्र को बहुत ही सरलता एवं व्यापकता से प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं।

'एक इंच मुस्कान' (1963) मे लेखक राजेंद्र यादव ने अपनी पत्नी मन्नू भंडारी के साथ मिलकर प्रयोगात्मक और नवीन दृष्टिकोण से नया उपन्यास लिखने का प्रयास किया है। जिसमें दोनों लोग सफल हुए हैं। मूलतः इस उपन्यास को मन्नू भंडारी के द्वारा लिखा गया। कथा मुख्य रूप से अमला पर केंद्रित करके लिखा गया है। अपने उपन्यास में नए दृष्टिकोण के साथ राजेंद्र यादव ने अमर के स्वभाव को एक नया स्वरूप देने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में राजेंद्र यादव ने अमर का चित्रण किया है और मन्नू भंडारी ने रंजना, अमर और अमला का मुख्य पात्र के रूप में वर्णन किया है। उपन्यास में समाज की रूढिगत मान्यताएँ एक-एक करके टूटती हुई नजर आती हैं। मूल्यों से मूल्यों की टकराहट, नैतिकता से नैतिकता की भिडंत, दो पीढियों की टकराहट राजेंद्र के उपन्यासों में खूब देखने को मिलते हैं। भावुकता की जगह बौदधिकता, तटस्थता तथा पीडाभरी प्रतीक्षा इनके उपन्यासों में दिखाई देता है।

'एक था शैलेंद्र' उपन्यास में राजेंद्र यादव तत्कालीन स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु चल रहे आंदोलनों एवं जुलूसों का कच्चा चिटठा प्रस्तुत करते हैं। शैलेंद्र की कहानी स्वतंत्रता के पश्चात देश में व्याप्त प्राचीन मूल्यों का प्रामाणिक दस्तावेज है। पाश्चात्य मूल्यों के प्रकाश में भारतीय जीवन-मूल्यों को गतिरोधक तथा अनुपयुक्त समझा जाने लगा। साथ ही पश्चिमी संस्कृति की ओर युवा पीढ़ी का आकर्षण बढ़ने लगा। भारतीय संस्कृति के लिए शैलेंद्र पश्चिमी सभ्यता के नवीन मूल्यों को अश्लील और अमानवीय समझता है। इसलिए भारतीय समाज आज भी प्राचीन सभ्यता से मोह त्याग नहीं कर पाया है और न ही नए को स्वीकार कर पाया है। नारी स्वालंबी बनकर पुरुष की सहयोगिनी बनने की कोशिश करती है।

स्वातंत्र्योत्तरकाल में नैतिकता के बदलते स्वरूप एवं संक्रमण को झेलता हुआ भारतीय समाज बदलता हुआ दिखाई देता है। आज विवाह के पूर्व काम संबंध अब असामान्य नहीं रह गए हैं और न विवाह के बाद काम संबंध अनैतिक रह गया है राजेंद्र के उपन्यासों में सामान्य यौन प्रसंगों का चित्रण ज्यादा है। बहुत सारे धर्मों में आज भी समलैंगिकता एवं यौनक्रिया को पाप मानते हैं। इस तरह की विकृतियाँ हर समाज में विवाहेतर संबंधों में दिखाई पड़ती हैं।

संदर्भ ग्रंथः

1. डॉ. विनय पाठक, (2009), स्त्री-विमर्श, नई दिल्ली, भावन प्रकाशन, पृष्ठ सं' 118
2. सं. प्रेम भारद्वाज, पाखी पत्रिका, राजेंद्र यादव पर केंद्रित (सितंबर 2011) नोएड़ा, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या-90

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

3. तस्लीमा नसरीन, (2017), औरत का कोई देश नहीं, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ सं- 7
4. अनु. प्रभा खेतान / सिमोन द बोउवार, (2002), स्त्रीः उपेक्षिता, नई दिल्ली, हिंदी पॉकेट प्रकाशन, पृष्ठ सं- 31